A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

विचित्र वीणा साधिका: डॉ. राधिका

Chander Mohan
1140, Sector- 21 (Near Sec -21 HUDA Market) Pocket C, adjacent to Gate No 2, Gurgaon-

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 15 June, 2026

Mohan, C. (2026). Vichitra Veena Sadhika: Dr. Radhika. Swar Sindhu, 14(1), 318-322.

सार

ग्वालियर की समृद्ध सांगीतिक विरासत और पंडित 'कुण्डलगुरु' की महान् परंपरा को आगे बढ़ा रहीं डॉ. राधिका वीणा-साधिका भारतीय शास्त्रीय संगीत के आकाश में एक दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। गायन और सितार के परिवेश में पली-बढ़ी होने के बावजूद उन्होंने महिलाओं के लिए अत्यंत दुर्लभ माने जाने वाले वाद्य 'विचित्र वीणा' को अपने जीवन का ध्येय बनाया। यह उनके उस विलक्षण दृष्टिकोण को उजागर करता है, जो लुप्तप्राय वाद्य को पुनर्जीवित करने के प्रति पूर्ण समर्पित हैं।

कुंजी शब्द: विचित्र वीणा, डॉ. राधिका

चन्द्र मोहन - आप ग्वालियर की समृद्ध संगीत- परम्परा और पंडित 'कुंडलगुरू' की विरासत से आती हैं। ग्वालियर घराना गायन के लिए प्रसिद्द है किन्तु आप द्वारा महिलाओं के लिए दुर्लभ विचित्र वीणा का चयन करने के पीछे क्या कारण अथवा प्रेरणा रही?

- डॉ. राधिका - "मेरा मानना है कि हर जन्म का एक विशेष प्रयोजन होता है। ग्वालियर की संगीत-परंपरा में गायन और सितार सीखते हुए भी मेरे मन में सदैव सिर्फ और सिर्फ एक ही धुन गूँजती थी 'वीणा-वादन ' और जब मुझे यह पता चला कि 'विचित्र वीणा' महिलाओं के लिए दुर्लभ मानी जाती है तो इसे एक चुनौती और संकल्प के रूप में स्वीकार किया। मुझे अनुभव हुआ कि ईश्वर ने मुझे इसी वाद्य के लिए ही रचा है। 'कोई भी कार्य महिलाओं के लिए असंभव नहीं है'—इसी विश्वास और अन्तरात्मा की पुकार ने ही मुझे इस दुर्लभ वाद्य की ओर प्रेरित किया।

चन्द्र मोहन -आपने अपने पिता सुप्रसिद्ध सितार - वादक पं. श्रीराम उमडेकर जी और मोहन वीणा-वादक पद्मभूषण पं. विश्व मोहन भट्ट जी से शिक्षा प्राप्त की है।ये दोनों ही अलग-अलग वाद्यों के विशेषज्ञ हैं अतएव दोनों की भिन्न शिक्षण-शैलियों अथवा तकनीक ने आपके वादन और आपकी अपनी 'शिक्षण-पद्धति' को कैसे रूपांकित किया?

- डॉ. राधिका - मेरी वादन -शैली और शिक्षण-पद्धति दोनों में ही मेरे दोनों गुरुओं पिता पं. श्रीराम उमडेकर जी और पं. विश्व मोहन भट्ट जी का अद्भुत संगम है। इन दोनों महान् विभूतियों ने मुझे संगीत के शिल्प और उसकी आत्मा दोनों से परिचित कराया। पिताजी से मुझे ग्वालियर-घराने की गायकी, रुद्र वीणा की गंभीरता, आलाप-जोड़ की बारीकियाँ और वादन की सौम्यता विरासत में मिली। उन्होंने सिखाया कि संगीत कठोर अनुशासन और निरंतर साधना का मार्ग है। उनकी शैली ने मेरे वादन को शास्त्रीय गहराई और 'परिपक्वता' (maturity) प्रदान की। गुरू पं. विश्व मोहन भट्ट जी से मैंने स्वर की सच्चाई और मधुरता सीखी। उनके शांत स्वभाव ने मुझे सिखाया कि शिक्षण में धैर्य का क्या महत्व है। मुझे 'स्वर के प्रवाह' और वादन की 'दैवीयता' को महसूस करना सिखाया, जहाँ स्वर ही परब्रह्म है और मेरी शिक्षण-पद्धति इन दोनों शैलियों को आत्मसात् कर 'अनुशासन और ममत्व' का मिश्रण बनी है। जहाँ मैं भीतर से साधना को लेकर अत्यंत गंभीर हूँ, वहीं विद्यार्थियों के प्रति मेरा दृष्टिकोण एक माँ की तरह संयमित है। मैं मानती हूँ कि प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता अलग होती है इसलिए मैंने शास्त्रीय संगीत को सरल और रोचक बनाने के लिए वर्क बुक्स, गेम्स और स्टोरी बुक्स जैसे प्रयोग भी किए हैं। मेरा उद्देश्य केवल तकनीक सिखाना मात्र ही नहीं बल्कि विद्यार्थी को संगीत के उस आनंद से भी जोड़ना है, जो ईश्वर और स्वयं की आत्मा की संतुष्टि के लिए हो।

चन्द्र मोहन - पारम्परिक विचित्र वीणा अपने बड़े आकार और वज़न के कारण कठिन और दुर्वह मानी जाती है। आपने जो 'कॉम्पैक्ट विचित्र वीणा' विकसित की है, उसने ध्वनि की गुणवत्ता पर क्या प्रभाव डाला है?

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) । Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

- डॉ. राधिका - "पारम्परिक विचित्र वीणा" का नाद अद्भुत होता है किन्तु मैंने अपनी 'कॉम्पैक्ट वीणा' में तारों के माप, मोटाई और जवारी पर विशेष कार्य किया है। तारों के आकार और तनाव (Tension) में बदलाव कर मैंने इसे और अधिक मधुर एवं सुरीला बनाया है। मन्द्र सप्तक की जवारी पर काम करने से इसमें मंदिर के गर्भगृह जैसी गूंज और गहराई पैदा होती है। पारंपरिक वीणा में बट्टा चलाने से आने वाली कर्कशता (कड़कपन) को दूर कर मैंने इसे सुकोमल और मधुरतम बनाया है। तरब के तार मुख्य स्वरों के साथ मिलकर एक अत्यंत प्रभावशाली आधार प्रदायक एवं निरन्तर बना रहने वाला नाद (sound) प्रदान करते हैं।

चन्द्र मोहन - 'वीणा वेणु आर्ट फाउंडेशन' की स्थापना किसने की और उससे सम्बद्ध आपने उसके माध्यम से संगीत को केवल प्रदर्शन तक ही सीमित न रखकर उसे एक 'संस्थागत ढांचा ' भी प्रदान किया है,इसके पीछे आपकी दीर्घकालिक दृष्टि एवं प्रयोजन क्या है?

- डॉ. राधिका - देखिए, यह संस्था मेरे दादाजी की संगीत-साधना का ही विस्तार है, जिसका उद्देश्य हमारी पारम्परिक कलाओं को संस्थागत स्थायित्व देना है। वर्तमान समय में बढ़ती मानसिक अशांति का समाधान संगीत और साधना में ही निहित है और हम कला को केवल सफलता का पैमाना ही नहीं बल्कि जीवन जीने की पद्धति भी मानते हैं। संगीत और वीणा जैसी प्राचीन धरोहरें हमारे राष्ट्र का गौरव हैं। यदि ये विलुप्त हुईं तो हमारा सांस्कृतिक अस्तित्व भी संकट में आ जाएगा अतएव फाउंडेशन का विज़न विभिन्न प्रोजेक्ट्स के माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ना और शास्त्रीय संगीत द्वारा वैश्विक स्तर पर शांति व कल्याण का संदेश फैलाना है।

चन्द्र मोहन -'अंतर्राष्ट्रीय विचित्र वीणा परिषद' अपनी तरह की एक अनूठी पहल है। विश्व स्तर पर भारतीय तार वाद्ययंत्रों के संरक्षण के लिए परिषद कौन से ठोस कदम उठा रही है?

- डॉ. राधिका - "अंतर्राष्ट्रीय विचित्र वीणा परिषद" का मुख्य ध्येय केवल संरक्षण ही नहीं बल्कि इन दुर्लभ वाद्यों का पुनर्जीवन और वैश्विक प्रसार भी है। इस दिशा में हम ठोस शैक्षणिक ढांचे तैयार कर रहे हैं ताकि नई पीढ़ी इसे सहजता से सीख सके। हम विभिन्न प्रशिक्षण-कार्यशालाओं, .जागरूकता-अभियानों और अंतर्राष्ट्रीय मंचों के माध्यम से इन वाद्यों की पहुँच बच्चों से लेकर बड़ों तक सुनिश्चित कर रहे हैं ताकि शास्त्रीय तंत्री वाद्यों की गूँज आधुनिक समय में भी वैश्विक स्तर पर निरंतर बनी रहे।

चन्द्र मोहन - आपने 500 से भी अधिक छात्रों को प्रशिक्षित किया है। एक ऐसा वाद्य, जिसमें 'फ्रेट्स' यानि पर्दे नहीं होते, उसे आधुनिक पीढ़ी के लिए सरल और व्यवस्थित बनाने के लिए आपने किस तरह का पाठ्यक्रम निर्माण अथवा शिक्षा - प्रणाली विकसित की है?

- डॉ. राधिका - विचित्र वीणा में पर्दे न होने के कारण मेरी शिक्षण-प्रणाली का मुख्य केंद्र बुनियादी धरातल पर 'श्रवण और स्थायित्व,जमाव अथवा सुर का पक्कापन ' है। पाठ्यक्रम में केवल रागों की संख्या बढ़ाने की बजाय 'एक स्वर-सच्चा स्वर' के सिद्धांत पर बल दिया जाता है। सीखने की प्रक्रिया ध्यान और साधना से आरंभ होती है, जिससे छात्र की सुनने की क्षमता (Ear Training) परिपक्व हो सके। मैंने .वीणा के आकार को सहज बनाया है और पाठ्यक्रम को इस तरह व्यवस्थित किया है ताकि छात्र केवल रचनाएँ ही न बजाएँ बल्कि संगीत की गहराई और उसकी आत्मा को भी अनुभूत करें। हमारा लक्ष्य तकनीक के साथ-साथ छात्र के अंतःकरण को भी संगीतमय बनाना है।

चन्द्र मोहन -आपकी पुस्तक "वीणा: एक ब्रह्मांडीय यंत्र" वीणा को मंत्र और तंत्र से जोड़ती है। संगीत के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक पक्ष का यह संयोग आज के शोधकर्ताओं के लिए कितना महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ शोध के नये मार्ग खोलता है?

- डॉ. राधिका - मेरी यह पुस्तक 'वीणा: एक ब्रह्मांडीय यंत्र' इस विचार को स्थापित करती है कि वीणा मात्र एक वाद्य ही नहीं अपितु यंत्र, मंत्र और तंत्र का जीवन्त सम्मिलन है और शोधकर्ताओं के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ये संगीत को प्रदर्शन की परिधि से बाहर निकालकर 'नाद-विज्ञान' के क्षेत्र में ले जाती है। वीणा के कम्पनों और शारीरिक-मानसिक प्रभावों को परस्पर जोड़कर देखने से न्यूरो-म्यूज़िकोलॉजी (Neuro-musicology) और ध्वनि-चिकित्सा (Sound Therapy) जैसे आधुनिक शोध-मार्ग खुलते हैं। यह पुस्तक हमारी प्राचीन साधना-पद्धति और आधुनिक विज्ञान के बीच एक सेतु का कार्य माना जा सकता है।

चन्द्र मोहन - संगीत को बच्चों तक पहुँचाने के लिए आपने कॉमिक्स और रंग भरने वाली किताबों का भी प्रयोगात्मक सहारा लिया है तो क्या आपको लगता है कि यही सबसे प्रभावी तरीका है?

- डॉ. राधिका - बच्चों की दुनिया कल्पना और खेल में बसती है। अगर हम संगीत को उनकी भाषा में पहुँचाना चाहते हैं तो वह केवल शिक्षा नहीं बल्कि एक "खेल-खेल में साधना" होनी चाहिए। रंग भरने वाली किताबें, कॉमिक्स,चित्रों और पात्रों के जरिए बच्चों में संगीत के प्रति सम्मान और भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव के भाव को जगाना है। यह तरीका सबसे प्रभावी इसलिए है क्योंकि यह बच्चों को रटन्त विद्या से दूर संगीत के साथ आत्मिक अथवा भावनात्मक रूप से जोड़ता है।

चन्द्र मोहन - 'अंतर्राष्ट्रीय विचित्र वीणा - दिवस' और 'वीणा-युग अनंत' जैसे एक विशिष्ट कॉन्सेप्ट अथवा सुविचार के माध्यम से आपने लाखों लोगों तक विचित्र वीणा को पहचान प्रदान करने की सराहनीय कोशिश की है, इस प्रक्रिया ने आम आदमी की धारणा को कैसे बदला है?

- डॉ. राधिका - जो वाद्य अपनी पहचान खो चुका था, उसे इन वैश्विक अभियानों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है तथा एक विशेष दिन (वीणा -दिवस) निर्धारित करने से समाज में इस वाद्य के प्रति जिज्ञासा और गौरव का भाव जग पायेगा। इसी तरह 'वीणा-युग अनंत' के माध्यम से हमने यह संदेश दिया है कि वीणा का संगीत काल-निरपेक्ष है, जिससे आम आदमी की दृष्टि में शास्त्रीय वाद्यों के प्रति सम्मान भाव बढ़ पायेगा। इन उपक्रमों के द्वारा शास्त्रीय संगीत और आम जनता के बीच की दूरी को कम कर के उसे एक 'साझा विरासत' के रूप में स्थापित किये जाने का समर्पित प्रयास किया गया है।

चन्द्र मोहन - टी-शर्ट, मग और स्टिकर जैसे उत्पादों के माध्यम से वीणा को घरों तक पहुँचाने का नेक विचार बतौरकलाकार आपके मन में कैसे आया और क्या यह सार्थक भी हुआ है ? कृपया संगीत-जगत को इसकी प्रगति अथवा परिणाम से अवगत करायें!

- डॉ. राधिका - संगीत और परम्पराएँ जब केवल मंचों तक ही सीमित रहेंगी और वे आम जनमानस के हृदय में स्थान नहीं बना पाएंगी, मेरी दृष्टि में यह उसकी सार्थकता नहीं इसलिए टी-शर्ट, मग और स्टिकर जैसे उत्पादों के माध्यम से, वीणा को समाज के अभिजात्य वर्ग (elite circle) से बाहर निकालकर उन्हें आम लोगों के जीवन का हिस्सा बनाना मेरा उद्देश्य है। जब कोई बच्चा अपनी नोटबुक पर वीणा का स्टिकर लगाता है या कोई युवा वीणा चित्रित की हुई टी-शर्ट पहनता है, तो वह वाद्य उनके लिए यांत्रिक नहीं बल्कि 'अपना' हो जाता है। यह प्रयोग अत्यंत सार्थक सिद्ध हुआ है क्योंकि यह 'जुड़ाव' ही 'प्रेम' की पहली सीढ़ी है, इसने वीणा के प्रति एक सहज आत्मीयता पैदा की है, जिससे नई पीढ़ी अब इस परम्परा की ओर आकर्षित हो रही है।

चन्द्र मोहन - आपके फाउण्डेशन के अंतर्गत 'एआई प्रयोगशाला' और 'नाद-स्वर चिकित्सा" जैसे आधुनिक विभाग हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत और आधुनिक तकनीक के इस समन्वय को आप कहाँ देखती हैं?

- डॉ. राधिका - भारतीय शास्त्रीय संगीत एक सूक्ष्म विज्ञान है, जहाँ प्रत्येक स्वर और कंपन का हमारे शरीर व मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। 'एआई प्रयोगशाला' और 'नाद-स्वर चिकित्सा' का उद्देश्य इस प्राचीन ज्ञान को आधुनिक मापदंडों पर परखना और साक्ष्यों के साथ दुनिया के सामने लाना है। हम तकनीक का उपयोग केवल अपनी परम्परा और शास्त्रीयता को सुरक्षित रखते हुए नवाचार के लिए कर रहे हैं ताकि हमारी युवा पीढ़ी अपनी धरोहर को आधुनिक संदर्भों में समझ सके और उस पर शोध कर सके।

चन्द्र मोहन - कई प्रतिष्ठित मंचों पर प्रदर्शन करने के बाद आप उन युवा महिलाओं को क्या संदेश देना चाहेंगी, जो विचित्र वीणा जैसे कठिन और दुर्लभ वाद्य यंत्रों में अपना कैरियर बनाना चाहती हैं?

- डॉ. राधिका - मेरा संदेश एकदम सीधा और सरल है। संसार में कुछ भी असाध्य या असंभव नहीं है, बशर्ते आपका उद्देश्य और दिशा सही हो। जब आप अपने मानस-पटल से 'कठिन' और 'दुर्लभ' जैसे शब्दों को हटाकर उन्हें 'सहज' और 'संभव' में बदल देंगे तो सफलता का मार्ग स्वयं ही खुल जाएगा। विचित्र वीणा जैसे वाद्य केवल तकनीक ही नहीं बल्कि आपके संकल्प की सम्पूर्ण परीक्षा हैं। अपनी ऊर्जा को सही दिशा दें, विश्वास रखें और कला के माध्यम से यह सिद्ध करें कि कला की दुनिया में लिंग (Gender) भी कोई मायने नहीं रखता।

चन्द्र मोहन -आपको कोई शीर्ष सम्मान अथवा उपलब्धि?

- डॉ. राधिका - संसार द्वारा प्रदत्त पुरस्कारों और सम्मानों के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ किन्तु मेरी दृष्टि में मेरा सबसे शीर्ष सम्मान मेरे 'मनुष्य -जीवन' और 'विचित्र वीणा' का सुसंयोग है और यही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है। मेरी सार्थकता इसी को मानती हूँ कि मैं वीणा के माध्यम से पूर्ण होती हूँ और वीणा मेरे माध्यम से विश्वपटल पर अपनी पहचान बना रही है।

चन्द्र मोहन - भविष्य में आपका कोई सपना ?

- डॉ. राधिका - मेरा एक ही स्वप्न है कि संगीत और वीणा की गूँज केवल मंचों तक ही सीमित न रहे बल्कि यह जन-जन के जीवन में शांति के सुखद मोती पिरोने का माध्यम बने।"

उपसंहार

ग्वालियर की समृद्ध सांगीतिक विरासत और पंडित 'कुण्डलगुरु' की महान् परंपरा को आगे बढ़ा रहीं डॉ. राधिका वीणा-साधिका भारतीय शास्त्रीय संगीत के आकाश में एक दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। गायन और सितार के परिवेश में पली-बढ़ी होने के बावजूद उन्होंने महिलाओं के लिए अत्यंत दुर्लभ माने जाने वाले वाद्य 'विचित्र वीणा' को अपने जीवन का ध्येय बनाया। यह उनके उस विलक्षण दृष्टिकोण को उजागर करता है, जो लुप्तप्राय वाद्य को पुनर्जीवित करने के प्रति पूर्ण समर्पित हैं।

संदर्भ

1. डॉ. राधिका का साक्षात्कार